आनंद कल्याण

वि.सं. २०७१ - अषाढ वद - ३ • दि. १५ जून, २०१४ • अंक - १

1

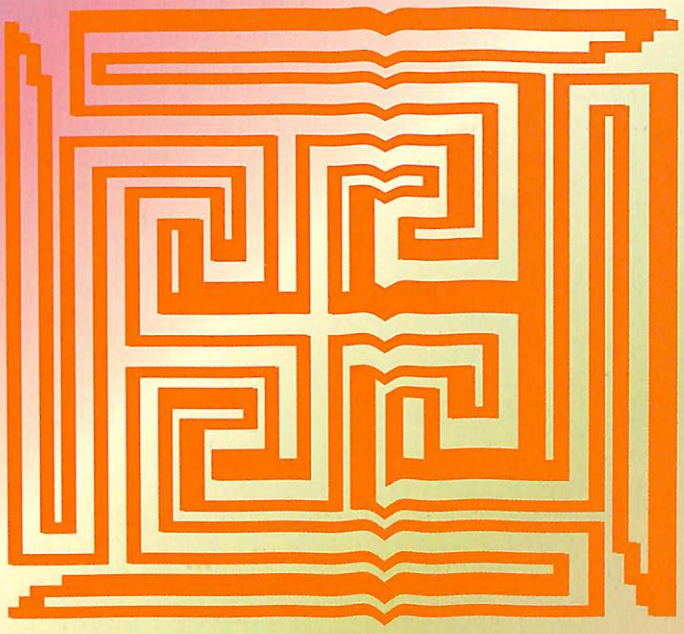

शेठ आणंदजी कल्याणजी पेढी
अहमदाबाद

आणंदजी कल्याणजी पेढी के पूर्व प्रमुख

शेठश्री हेमाभाई वखतचंद

शेठश्री प्रेमाभाई हेमाभाई

शेठश्री मयाभाई प्रेमाभाई

शेठश्री लालभाई दलपतभाई

शेठश्री चीमनलाल लालभाई

शेठश्री कस्तूरभाई मणिभाई

''आनंद कल्याण'' (त्रिमासिक पत्र)

(धार्मिक धर्मादा ट्रस्ट रजी नं. ए-१२९९/अहमदाबाद)

आनंद कल्याण

वर्ष : १ अंक : १ किंमत : ₹ २० वार्षिक शुल्क : ₹ ७५

तीर्थंकर भाषित धर्म है अपना अति महान
गणधर गूंफित द्वादशांगी को हो प्रणाम ।
साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविका
संघ चतुर्विध के गुणगान
गुणवानों से गुणी होंगे हम
गुणवानों का करों सन्मान
सृष्टि के सभी जीव चाहे
सुख और शांति के वरदान
तन की स्वस्थता, मन की प्रसन्नता
जीवन में सभी पाओ ज्ञान
कर्मो के बंधन को तोड़कर
मुक्त हो सब करना उडान
सब को मिले और सब तक पहुँचे
जीवन में आनंद कल्याण !

वि.सं. २०७१, भद्रबाहु विजय

: प्रकाशक :

शेठ आणंदजी कल्याणजी पेढी

श्रेष्ठी लालभाई दलपतभाई भवन,
२५, वसंतकुंज, नवा शारदा मंदिर रोड, पालडी, अहमदाबाद-३८० ००७.

आनंद कल्याण (त्रैमासिक पत्र)

वर्ष : १ अंक : १

प्रकाशन

वि.सं. २०७१, अषाढ वद-३ ● ता. : १५-०६-२०१४, रविवार

प्रकाशक

कर्नल गौतमभाई शाह (जनरल मेनेजर)

शेठ आणंदजी कल्याणजी पेठी
श्रेष्ठी लालभाई दलपतभाई भवन,
२५, वसंतकुंज, नवा शारदा मंदिर रोड़, पालडी, अहमदाबाद-३८०००७

दूरभाष : 26644502 – 26645430

E–mail : shree_sangh@yahoo.com

मुद्रक :

नवनीत प्रिन्टर्स (निकुंज शाह)

२७३३, कुवावाली पोल, शाहपुर, अहमदाबाद-१

मोबाईल : ९८२५२६११७७ ● E–mail : navneet1177@gmail.com

भारतभर के जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक श्री संघ का प्रतिनिधित्व करनेवाली संस्था : आणंदजी कल्याणजी पेढी

इसकी अनेकविध प्रवृत्तियों के बारें में यदि आपको सही जानकारी प्राप्त करना है ? पेढी से संपर्क बनाये रखना है ? पेढी के द्वारा व्यवस्थापित तीर्थो के बारे में कुछ भी जानना है ? जीवदया-पांजरापोल की पेढी के प्रवृत्ति से परिचय करना है तो अब केवल **www.anandjikalyanji.com** पर लॉग-ऑन कीजिए । '**आनंदकल्याण**' मेगेजीन पढने की आदत डालिए। और पेढी के साथ जुडिये... जुड़े रहिये ।

आनंदजी कल्याणजी पेढी के चेरमेन एमिरेट्स शेठ श्री श्रेणिकभाई कस्तुरभाई का संदेश

आनंदजी कल्याणजी का नाम आता है कि मेरे मनोजगत मे आनंद की लहरें उठती है। मेरे पुरखों का इस पेढी से अंतरंग नाता रहा है। बरसों से यह पेढी और इस पेढी से जुड़ी एक एक बात मेरा भाव विश्व बनी है। मेरे दादा शेठ लालभाई दलपतभाई ने इस पेढी को नौं साल (१८-५-१९०३ से ५-६-१९१२) तक अपनी सेवाएं प्रदान की। सम्मेतशिखरजी पर बोडम महाशय के द्वारा सूचित सूअरों के बूचड़खाने को नही होने देने में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा। मेरे पूज्य पिताश्री शेठ कस्तुरभाई लालभाई ५० बरस (२५-१०-१९२५ से ८-३-१९७६) जितने एक लम्बे अरसे तक पेढी के प्रमुख पद पर रहे। उनके कार्याकाल के दौरान तो ढेरों महत्त्वपूर्ण कार्य हुए। आबू, राणकपुर, कुंभारिया, तारंगा जैसे शिल्प स्थापत्य और कला से समृद्ध जिनालयों का सर्वांगीण जीर्णोद्धार। पालीताना की यात्रा से संबंधित प्रस्तावित कर को लेकर सन् १९२६ से १९२८ दो साल तक सकल श्री संघ द्वारा एकजुट होकर यात्रा का पूर्णतया बहिष्कार व बाद में समाधान की सफलता! शत्रुजय तीर्थ पर नई टोक का नवनिर्माण करवा के सैंकडों जिनप्रतिमाओं की आशातना दूर करते हुए सुनियोजित ढंग से उन्हें पुनर्स्थापित करने का अति महत्त्वपूर्ण कार्य ! तीर्थरक्षा से संबंधित प्रश्नों को कूटनीति के जरिये हल करना वगैरह इतने कार्य हुए हैं कि उनकी सूचि ही पन्नों को भरने के लिए पर्याप्त है।

वैसे देखा जाए, तो मैं सर्व प्रथम वि.सं. २०२३, जेठ सुद १० के दिन यानी १७-६-१९६७ को पेढी की सभा में निरीक्षक के रुप में उपस्थित रहा। पिताजी की और से मिली सूचना के मुताबिक मुझे एक भी शब्द बोले बगैर या प्रतिभाव दिये बगेर सारी कार्यवाही को केवल देखना था... समझना था। और मैने खामोशी के साथ समूची सभा की कार्यवाही को देखा। इसके बाद मैं उनके साथ व अन्य ट्रस्टी महोदयों के साथ पेढी प्रबंधन के तमाम तीर्थों की मुलाकातें लेता रहा... मुझे जो जानना था, समझना था... वह पेढी के अनुभवी व दीर्घद्रष्टा ट्रस्टी एवं परम आदरणीय शेठ केशुभाई लल्लुभाई से जानता रहा... समझता रहा। इस तरह पेढी के साथ की मेरी यात्रा का आरंभ हुआ। मेरी ३८ बरसों के (१९६७ से १९७६ आमंत्रित सदस्य एवं ८-३-१९७६ से ६-११-२००५ तक) कार्यकाल के दौरान श्री संघ के अनेक कार्यों में सहभागी होने का सद्भाग्य प्राप्त हुआ। चतुर्विध श्री संघ को निकटता से देखने-समझने का मौका मिला। ठीक है, आज मैं पेढी के पदाधिकारियों में शामिल नहीं हूं पर मेरा मन, मेरी आत्मा... मेरा पूरा मनोजगत तो पेढी से जुड़ा हुआ ही है। शायद जीवन का हर पल और समूचा अन्तस्तल पेढी की इक इक बात से भरापूरा है।

पेढी का कार्यक्षेत्र और उसके कार्यो का व्याप इतना अधिक है कि लोगों तक यदि सही जानकारी नहीं पहुँचती है तो गलतफहमी होने की पूरी संभावना है... और कई बार ऐसी विडंबना पैदा हुई है। पेढी केवल जीर्णोद्धार ही करवाती है या तीर्थो का प्रबंधन ही करती है... वैसा नही हैं। अनेक प्रकार के कार्यक्षेत्रों में पेढी का अपना योगदान है... प्रदान है।

पेढी की तमाम प्रवृत्तिओ की जानकारी चतुर्विध संघ के प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँचे यह जरुरी था... इसके लिए पेढी का एक मुखपत्र भी आवश्यक था, पर कई कारणों से वह संभव हुआ नहीं ! गुजराती भाषा में त्रैमासिक के रुप मे पिछले वर्ष ही इस का आरंभ हुआ । और आज **आनंद कल्याण** हिन्दी भाषी विशाल जनता के लिए हिन्दी में तैयार होकर आप तक पहुँच रहा है । देर-सबेर भी यह स्वप्न साकार हो रहा है इसकी खुशी तो होगी ही । इस प्रयास से पारदर्शिता बढेगी, गलतफहमियां दूर होगी, कम तो होगी ही ।

मुझे भरोसा है ... पूरा विश्वास है की... वर्तमान ट्रस्टी मंडल एवं कार्यवाहक गण, पेढी के इस मुखपत्र की जिम्मेदारी पूरी निष्ठा से उठायेगें। पहली बात तो मुखपत्र प्रगट करने का निर्णय करना यही अपनी आप में बड़ा साहस है । जबकि उसे अंजाम तक पहुंचाना, नियमित प्रगट करना, आँख और दिल को रुचे और जँचे वैसा बनाना... यह सचमुच एक लंबी व सावधानीभरी प्रक्रिया है । फिलहाल शुरुआत हुई है । यही महत्त्वपूर्ण है । रास्ता चाहे मीलों लंबा ही क्यों न हो, आखिर एक कदम तो उठाना ही होता है। शुभ आशय और सही इरादों के साथ हो रही तमाम प्रवृत्तियों को मेरे आशीर्वाद और अभिनंदन होंगे ही । और फिर, यह तो मेरे अपने प्रभु की पेढी का मुखपत्र प्रगट हो रहा है... इसकी खुशी तो उछलेगी ही !

इस प्रवृत्ति को आप सभी भी आशीर्वाद दे... स्वागत करें... इसे पूरा सहयोग दे... सहकार करें... वैसी मेरी आप सभी से विनति है । सभी को आनंद और कल्याण की प्राप्ति हो... और वह प्राप्त होने मे आणंदजी कल्याणजी निमित्त बने.... वैसी शुभ कामना के साथ समापन करता हूं ।

अध्यक्षीय आलेख

श्रमण-श्रमणी-प्रधान एवं श्रावक-श्राविकारुप चतुर्विध संघमय धर्मतीर्थ को भावपूर्वक वंदना करके मैं धन्यता महसूस कर रहा हूँ । अंदाजन २८२ साल से भी ज्यादा बरसों से सकल श्री संघ की सेवा में कार्यरत आणंदजी कल्याणजी पेढी ट्रस्ट के अध्यक्ष के रुप में प्रस्तुत सामयिक के द्वारा आप से मिलने का एक मौका मैंने पाया है यह मेरा सद्‌भाग्य है ।

पेढी की अलग-अलग प्रवृत्तियों के बारे में आप सभी को समुचित जानकारी प्राप्त हो इसी उद्देश्य से इस त्रिमासिक पत्र का आरंभ किया गया है ।

शेठ आणंदजी कल्याणजी पेढी श्री शत्रुंजय, श्री गिरनारजी, श्री तारंगाजी, श्री कुंभारिया जी, श्री शेरिसा एवं वामज, श्री राणकपुरजी, श्री मूछाला महावीर जी, एवं श्री मक्सीजी आदि तीर्थो का प्रबंधन करती है । इस उपरांत सम्मेत शिखरमहातीर्थ के कानूनी व अन्य समस्याओं के समाधान के लिए सघन प्रयास करती है। प्राचीन जिनालयों के जीर्णोद्धार व आवश्यक होने पर नूतन मंदिरो के निर्माण हेतु कुछ कुछ लाभ लेती रहती है । वैसी एक सर्वसामान्य छबि के सामने पेढी की अनेकविध प्रवृत्तियां, कि जिनका व्याप अति विस्तृत है... फैला हुआ है... वह सब जानकारी आप लोगों तक पहुँचे यह मुझे बहुत ही आवश्यक प्रतीत हो रहा था ।

तीर्थसंरक्षण, तीर्थ व्यवस्था-प्रबंधन, जिनालयों का पुनर्स्थापन, जीवदया, श्रुतसंवर्धन, साधु-साध्वीजी की वैयावच्च-भक्ति, साधर्मिक सहयोग वगैरह अनेक तरह के कार्यो के जरिये आणंदजी कल्याणजी पेढी श्री संघ की सेवा में सतत जागरुक प्रहरी की भांति सतत प्रवृत्त रही है । समय के बदलाव के साथ साथ विकास की सीढिया सर होने लगी । नयी नयी क्षितिजें खुलने लगी... साथ ही छोटी बड़ी समस्याएं भी पैदा होने लगी । प्रवृत्ति के

पथ पर कुछ तो चुनौतियां आती ही है। तरह तरह के सवाल खड़े होते हैं... किन्तु, शासनदेव और चतुर्विध श्री संघ के आशीर्वाद व अपनत्व के बल पर पेढी कठिनाइयों भरी परिस्थिति में भी रास्ता खोज लेती है। सहकार, सुलह, समाधान और विकास यह पेढी के लिए प्राणवायु से परिबल है। पेढी समग्र श्री संघ को समर्पित है। पेढी श्रीसंघ की ही है। पेढी अपनी प्रणालिका व परंपरा के मुताबिक कार्य करती है। हम सब एक दूजे के प्रतिस्पर्धी या विरोधी नही वरन् अन्योन्य पूरक बनकर, सहयोगी व सहायक होकर विकास के नये नये शिखरों की और कदम बढाये एवं जिनशासन की शान बढाये।

पिछले काफी अरसे से एक सवाल मन में उठता रहता है। मेरी उस पीड़ा में आज में आपको सहभागी बना रहा हूं।

प्राचीन जिनमंदिर, यह हमारे भव्य भूतकाल, अद्‌भूत अतीत की किमती धरोहर है... उनकी कला, स्थापत्य, संरचना, ढांचा, निर्माण इन सब में हमारा इतिहास समाया हुआ है। स्वाभाविक है कि पुराना जर्जरित हो... जीर्ण हो... उसे सुधारने की, सम्हालने की आवश्यकता पैदा हो, यह सब हम करें,... यह हमारा परम कर्तव्य भी है। पर इन नवीनीकरण के प्रयासों में असलियत एवं प्राचीनता बरकरार रहे... उस युग की, उस समय की संस्कृति, कलाकृति... और इतिहास सुरक्षित रहे... यह अत्यंत आवश्यक है। कुछ कारणवश जिनमंदिर को उतारना है... बदलना है, नया बनाना भी हो तो मंदिर में भी उसके प्राचीन इतिहास के अनुरुप वैसी ही कलाकृतियां बनाना, यह मुझे बेहद जरुरी प्रतीत हो रहा है। मेरी ऐसी द्रढ मान्यता भी है। उस समय की संस्कृति, कलाकृति व हमारा इतिहास विलुप्त न हो जाये... इसका ध्यान रखना ही होगा। हम यदि हमारी प्राचीन संस्कृति, कलाकृति, इतिहास, धरोहर, इन्हें सम्हाल कर, उन्हे सुरक्षित रखते हुए आनेवाली पीढी के लिए रखेंगे तो एक महत्त्वपूर्ण कार्य करने का संतोष प्राप्त होगा।

आजकल तो तकनीकी विज्ञान एवं अन्य साधनों की काफी उपलब्धियां है... विकास है... जिनके जरिये बड़ी अच्छी तरह से पुराने को सहेज कर सुव्यवस्थित रखा जा सकता है। पर इसके लिए हमारी जागृति, तय्यारी और साथ ही प्राचीनता को पहचानने की पारखी नजर चाहिए।

वैसी ही आवश्यकता ज्ञान के क्षेत्र में भी खडी होगी। हमारे ज्ञानभंडार, ग्रंथ वगैरह भी अच्छी तरह से सुरक्षित रहे, इसके लिए भी हमें कमर कसनी होगी। दुर्भाग्यवश हमारे ढेरों प्राचीन महत्त्वपूर्ण ग्रंथ बाहर चले गये। कहीं थोडे बहुत संग्रहालय या व्यक्तिगत संग्रहों में पडें होंगे तो उनकी भी घोर आशातना हो रही होगी।

अंत में एक अत्यंत महत्त्व की बात :

मेरे विनम्र मंतव्य के मुताबिक सकल संघ की एकवाक्यता बहुत ही आवश्यक है। मैं निश्चित रुप से मानता हूं कि यह बात काफी संवेदनशील है.... मुश्किल है... आसान नहीं है... पर यदि हम तनिक शांति से सोचे कि 'हम सभी परमात्मा महावीरस्वामी के ही है। उन्ही के संघ के अंग है।' तो आगे के भविष्य में काफी अच्छा परिणाम निश्चितरुप से प्राप्त हो सकता है।

'आनंद' व 'कल्याण' यह हर एक का स्वप्न होता है सभी के लिए वह साकार हो, यही अभ्यर्थना।

जिनशासन की मर्यादा के विरुद्ध कुछ लिखा गया हो, कहा गया हो तो मैं अन्तःकरणपूर्वक सकल श्री संघ को 'मिच्छामि दुक्कडं' का निवेदन करता हूं।

संवेग लालभाई

अध्यक्ष

शेठ आणंदजी कल्याणजी पेढी

शेठ आणंदजी कल्याणजी पेठी : एक परिचय !

शेठ आणंदजी कल्याणजी पेढी यानि भारतभर के तमाम श्वेतांबर जैन संघ का प्रतिनिधित्व करनेवाली शानदार संस्था ।

यह नाम किसी व्यक्ति के नाम पर से नहीं, वरन् श्री संघ का नाम और काम सदैव आनंदकारी व कल्याणकारी ही होता है... एवं श्री संघ में सदैव आनंद और कल्याण बना रहे वैसे भाव के साथ आनंद और कल्याण इन दो शब्दो को जोड़कर यह नाम अस्तित्व में आया है । यह नाम कब से चला ? किसने नाम दिया ? वगैरह सवालों के जवाब में जब तलाशते हैं तो जानकारी मिलती है ।

पालिताना (शत्रुंजय पर्वत की तलहटी में बसा शहर) के वि.सं. १७८७ यानी इस्वीसन १७३१ के हिसाबी बही में आनंदजी कल्याणजी का नामोल्लेख आणंद-कल्याण के रुप में प्राप्त होता है । हो सकता है इस से पूर्व भी यह नाम अस्तित्व में आ गया हो । वि.सं. १८१५ यानी की इस्वीसन् १७५९ के वर्ष में तो आणंदजी कल्याणजी वैसा स्पष्ट उल्लेख मिलता ही है । वि.सं. १७८७ से १८८० (इसवी १७३१ से १८२४) तक आणंदजी कल्याणजी पेढी, जो पहले कारखाना नाम से भी सूचित थी, उन दिनों गुजरात के अधिकांश तीर्थो के प्रबंधन को पेढी... कारखाना वगैरह नामों से पहचाना जाता था । ६०-७० के दशक तक शंखेश्वर की पेढी के साथ में कारखाना शब्द जुड़ा हुआ हम सब की स्मृति में है । यह कारखाना व्यावसायिक रूप की यंत्रशाला या फेक्ट्री के अर्थ में प्रयुक्त नहीं होता था । मात्र व्यवस्था प्रबंधन के अर्थ में कारखाना शब्द का उपयोग होता था ।

सन् १८८० में पेढी के तत्कालीन प्रमुख एवं अहमदाबाद के नगरशेठ श्री प्रेमाभाई हेमाभाई के नेतृत्व में इस पेढी का सर्वप्रथम संविधान बना । सन १९२१ में २८-२९-३० दिसंबर को अहमदाबाद में आयोजित पेढी के विशेष अधिवेशन में समग्र भारत में से ९० नगरों के ११० प्रतिनिधियों ने इस पेढी को भारतभर के श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ का प्रतिनिधित्व सुपुर्द

किया । तब से आज तक पेढ़ी ने हर तरह से श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन संघ के सातों क्षेत्र की व्यवस्था की जिम्मेदारी पूरी तरह निभायी है । विशेष रुप से तीर्थरक्षा, तीर्थ-व्यवस्था, जिनमंदिर जीर्णोद्धार, जीवदया-पाँजरापोल, श्रुत-संरक्षण, साधु-साध्वीजी की भक्ति इत्यादि तमाम क्षेत्रों के योगक्षेम के लिए सजग है, सक्रिय है, एवं सतत प्रवृत्त है । एक महत्त्वपूर्ण कदम के रुप में सन १८१८ में इस पेढी की और से पूर्व भारत के प्रमुख श्वेताम्बर तीर्थ सम्मेतशिखर पर्वत के रख-रखाव एवं संरक्षण हेतु पूर्व भारत के पालगंज राज्य के साथ वार्षिक १५,०००/ रु. के एवज में करार किया गया । इसके चालीस वर्ष बाद सन १९१८ में ढाई लाख रुपयों में पेढी ने पालगंज के तत्कालीन राजा से समूचा सम्मेतशिखर पर्वत खरीद लिया और उसका कानूनी दस्तावेज भी समग्र श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ के प्रतिनिधि के रुप में शेठ आणंदजी कल्याणजी पेढी के तत्कालीन प्रमुख नगरशेठ कस्तूरभाई मणीभाई के नाम से किया गया था । बाद में १८१७ से लेकर १९६४ तक समय समय पर अनेक तीर्थो की व्यवस्था पेढी के अधिकार क्षेत्र में आयी और आज भी शत्रुंजय, गिरनार, तारंगा, शेरिसा, कम्भारिया, वामज, राणकपुर, मुछाला-महावीर, मक्षी इत्यादि अनेक तीर्थो की समूची व्यवस्था इसी पेढी की और से की जा रही है ।

इस पेढी का मुख्य कार्यक्षेत्र जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन संघ के पवित्र तीर्थस्थान एवं जिनमंदिर जिनबिम्ब वगेरह की देखरेख करना... उनके हितों की और अधिकारों की रक्षा के लिए कार्य करना, उसमें सहयोग करना... वगेर है । जैन शासन के सातों क्षेत्र के विकास व योगक्षेम के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहना । श्री संघ की धर्मभावना को टिकाये रखने एवं बनाये रखने के लिए जहां नूतन जिनालय की आवश्यकता हो वहां पेढी की ओर से समुचित मार्गदर्शन व आर्थिक सहयोग करना भी महत्त्व का है ।

पेढी ने पिछले दिनों अहमदाबाद के जिनालयों के लिए सुरक्षा हेतु से गोदरेज कंपनी से विशेष तालों की व्यवस्था करके १५० से ज्यादा जिनालयों के लिए उस व्यवस्था का लाभ लिया । अब भारत के तमाम संघों

के जिनालयों के लिए उपर्युक्त व्यवस्था उपलब्ध करवाने का आयोजन किया जा रहा है ।

पूज्य साध्वीजी भगवंतों को आहार-पानी (गौचरी) हेतु लकडी के पाग (पातरे-तरपणी वगेरह) और उन्हें रंगने कि लिए आवश्यक साधन सामग्री की व्यवस्था भी पेढी ने रखी है । और बिना किसी भेदभाव के तमाम पूज्य साधु-साध्वीजी पात्र वगैरह अर्पण करने का लाभ पेढी की और से लिया जाता है ।

पूज्य साधु-साध्वीजी का कालधर्म (देहावसान) होने पर उनके पूण्यदेह कों अग्निसंस्कार करते वक्त चंदन की लकड़ियां अर्पण करने के लिए भी पेढी लाभ लेती है । इस हेतु पालीताणा व अहमदाबाद के पालखीमंडलों के साथ सहयोग करके सारी व्यवस्था जमायी जाती है ।

साधर्मिक भक्ति के लिए कमजोर आर्थिक परिस्थिति वाले साधर्मिक भाई-बहेनों को पेढी अपनी मर्यादा में रहते हुए सहयोग करती है । साथ ही इस प्रवृत्ति में कार्यरत संस्थाओं और कार्यकर्ताओं को उदारतापूर्ण सहयोग करके 'साधर्मिक सहयोग' की प्रवृत्ति को बढावा देती है ।

पेढी के प्रारंभ से ही अहमदाबाद के सुप्रसिद्ध नगरशेठ परिवार के श्रेष्यों ने इसका प्रबंध सम्हाला है... मुगल बादशाहों के सुप्रसिद्ध जौहरी शेठ **शांतिदास शेषकरण** के वंशजों ने हमेशा पेढी के द्वारा समग्र जैन संघ की सेवा की है । उनके अलावा अहमदाबाद के अग्रणी श्रावक-श्रेष्ठियों से संचालित इस पेढी के प्रबंधक ट्रस्टीगण पद्रंह दिन में एक बार सभा करते हैं... मिलते हैं... चर्चा करते हैं । उपस्थित प्रश्नों व समस्या के समाधान खोजते हैं । इस प्रक्रिया में स्थानिक एवं प्रादेशिक प्रतिनिधियों की सभाएं भी समय समय पर मिलती है... फिलहाल देश में ११० प्रतिनिधि इस पेढी के साथ जुड़े हुए है ।

आणंदजी कल्याणजी पेढी के भूतपूर्व अध्यक्ष एवं उनका कार्यकाल

(१) नगरसेठ प्रेमाभाई हेमाभाई (१९-९-१८८० से ३१-१०-१९८७)
(२) नगरसेठ मयाभाई प्रेमाभाई (२-११-१८८७ से ३-८-१९०२)

(३) नगरसेठ लालभाई दलपतभाई (१८-१-१९०३ से ५-६-१९१२)
(४) नगरसेठ चीमनभाई लालभाई (१३-६-१९१२ से २१-८-१९१२)
(५) नगरसेठ कस्तुरभाई मणीभाई (१-१-१९१३ से १२-१०-१९२७)
(६) सेठ श्री कस्तुरभाई लालभाई (२५-१०-१९२८ से ८-३-१९७६)
(७) सेठ श्री श्रेणिकभाई कस्तुरभाई (८-३-१९७६ से ६-११-२००५)
(८) सेठ श्री संवेगभाई लालभाई (६-११-२००५ से)

वर्तमान ट्रस्टी मंडल

(१)	सेठ श्री संवेगभाई लालभाई	(अध्यक्ष)
(२)	सेठ श्री सुधीरभाई यु. महेता	(ट्रस्टी)
(३)	सेठ श्री अशोकभाई सी. गांधी	(ट्रस्टी)
(४)	सेठ श्री गौरवभाई अनुभाई	(ट्रस्टी)
(५)	सेठ श्री जयेन्द्रभाई शांतिलाल	(ट्रस्टी)
(६)	सेठ श्री श्रीपालभाई रसिकभाई	(ट्रस्टी)
(७)	सेठ श्री सुदीपभाई सनतभाई	(ट्रस्टी)

पेढी के प्रबंधन मे आये तीर्थों को ब्यौरा

	तीर्थ	वि.सं.	इस्वीसन्
(१)	राणकपुर (राजस्थान)	१९५३	१८९७
(२)	गिरनार (गुजरात)	१९६३	१९०७
(३)	तारंगा (गुजरात)	१९७७	१९२१
(४)	मक्सी (मध्यप्रदेश)	१९७७	१९२१
(५)	कुंभारियाजी (गुजरात)	१९७७	१९२१
(६)	सेरिसा (गुजरात)	१९८४	१९२८
(७)	वामज (गुजरात)	१९९६	१९४०
(८)	मूछाला महावीर (राजस्थान)	२०२०	१९६४

'श्रुत आनंद' ट्रस्ट यानी आणंदजी कल्याणजी पेढी का जंगम श्रुत तीर्थ ।

जैन धर्म की परंपरा सातों क्षेत्रों में आनंदजी कल्याणजी पेढी ने सक्रिय रुप से रुची रखी है... और हर तरह से सहयोगी एवं सहभागी बनने की प्रवृत्ति की है ।

सात क्षेत्रों में एक महत्त्व का क्षेत्र है श्रुतज्ञान ! वैसे देखा जाए तो पेढी की ज्ञान से संबंधित प्रवृत्तिओं का सिलसिला प्रारंभ हुआ इस्वीसन १८९६ में जैन कन्याशाला को मदद करने से, इस्वीसन् १८९६ में ही व्यवहारिक एवं धार्मिक शिक्षा प्राप्त करनेवाले विद्यार्थी-विद्यार्थिनियों को शिष्यवृत्ति-स्कोलरशीप देने की परंपरा आरंभ करने से लेकर इस्वीसन १९११ में पालीताना में साध्वीजी महाराजों की पढाई के लिए पंडित-शास्त्रीजी को नियुक्त कर के एक या अन्यरुप में श्रुतसेवा के क्षेत्र में पेढी कार्यरत है ।

पेढी के चेरमेन एमिरेट्स एवं श्री संघ के अग्रणी श्री श्रेणिकभाई कस्तूरभाई ने अन्य ट्रस्टियों के साथ सलाह-मशविरा कर के पूज्य गुरुभगवंतों की प्रेरणा, सलाह आशीर्वाद के साथ... वि.सं. २०००के वर्ष में **श्रुत आनंद** ट्रस्ट की स्थापना की स्थापना की । इस ट्रस्ट की प्रवृत्तियों के लिए पेढी ने अपने मुख्य कार्यलय के समीपवर्ती एक अलग मकान भी आबंटित किया । उसमें आवश्यक बदलाव करके पेढी ने वर्तमान प्रमुख शेठ श्री संवेगभाई लालभाई के सक्रिय मार्गदर्शन के तले इस ट्रस्ट के अन्तर्गत निम्न प्रवृत्तियों का मंगल प्रारंभ किया ।

अध्ययन-अध्यापन

पूजनीय साधु-साध्वीजी महाराज के साथ साथ श्री संघ के श्रावक श्राविका वर्ग की ज्ञानोपासना में सहयोगी-उपयोगी हुआ जा सके इस उद्देश्य से विशिष्ट प्रतिभासंपन्न पंडितों की व्यवस्था करके श्रुत अध्ययन के वर्ग प्रारंभ

किये गये ।

प्रारंभ में दार्शनिक अध्ययन के लिए विद्वान पंडित श्री कल्याणजी शास्त्री के अध्यापन तले अनेक पूज्य साधु-साध्वीजी भगवंतों ने अध्ययन किया । संस्कृत-प्राकृत, भाष्य व्याकरण, प्रकरण ग्रंथ, कर्मग्रंथ वगैरह के गंभीर अभ्यासकों के लिए पंडितजी श्री केतनभाई की सेवाएं भी प्राप्त हुई । आज भी वह अध्ययन की प्रवृत्ति चल रही है ।

ज्ञानभंडार

अध्ययन की प्रवृत्ति के रुप ज्ञानभंडार की प्रवृत्ति का भी विकास किया गया । प्रारंभ में कुछ एक ग्रंथों का संग्रह था... पर धीरे धीरे ग्रंथ भंडार समृद्ध होता चला । आज करीबन २० हजार से ज्यादा प्रकाशित पुस्तकों एव प्रतों का संग्रह है । इस भंडार में संस्कृत, प्रकृत, गुजराती, हिन्दी और अंग्रेजी भाषा के पुस्तकों का संग्रह है । इस ग्रंथभंडार का उपयोग पूज्य साधु-साध्वीजी भगवंत एवं जिज्ञासु श्रावक-श्राविका वर्ग कर रहा है । पूज्य आचार्य भगवंत श्री विजय हेमचन्द्रसूरिजी एवं आचार्य श्री प्रद्युम्नसूरिजी म.सा. ने अपनी और से ५,००० से ज्यादा मुद्रित पुस्तकों का संग्रह इस संस्था को दिया । इस तरह यह ग्रंथभंडार समृद्ध हो रहा है ।

समय समय पर योग्य एवं उपयोगी पुस्तकों को खरीदकर भी बसाया जाता है ।

हस्तलिखित ग्रंथ

संस्था के पास ४,००० जितने हस्तलिखित ग्रंथों का संग्रह है । हस्तलिखित ग्रंथों (हस्तप्रत) की सुंदर सुरक्षा के पूरे उपाय किये गये हैं । यहां पर संग्रहित ग्रंथों का उपयोग पूज्य साधु-साध्वीजी एवं अन्य विद्वान भलीभांति कर रहे है । ये हस्तलिखित ग्रंथ शोध अध्ययन के लिए सरलता से उपलब्ध हो सके इस हेतु तमाम हस्तप्रतो को स्केनिंग कर लिया गया है ।

पूज्य श्रुतवारिधि जंबूविजयजी महाराज के द्वारा तैयार किये गये जैसलमेर, पाटण, की दुर्लभ हस्तप्रतों का फोटोकॉपी संग्रह भी संस्था में उपलब्ध है। अन्य ग्रंथ भंडारों की हस्तप्रतों की स्केन या झेरोक्ष कोपी उपलब्ध करवाने की कार्यवाही भी हो रही है।

प्रकाशन

जैन दर्शन के दुर्लभ और अलभ्य ग्रंथों के प्रकाशन का कार्य भी संस्था के द्वारा प्रारंभ किया गया है। श्री सिद्धर्षिगणि विरचित अत्यंत विस्तृत महत्त्वपूर्ण ग्रंथ 'उपमितिभव प्रपंचाकथा है, उसका संक्षिप्त संस्करण प्रकाशित किया गया है। भविष्य में अन्य ग्रंथ प्रकाशित करने की योजना है।

यह संस्था पेढी का ही हिस्सा है। एवं पूरी तरह पेढी के साथ संकलित है। पेढी के प्रयत्नों से ही विशिष्ट दानदाता परिवार की अनुमोदनार्थ संस्था के भवन को **'सुश्राविका सुलोचनाबेन नरोत्तमभाई लालभाई ज्ञानमंदिर'** नाम दिया गया। पेढी के द्वारा प्रस्तावित एवं प्रस्थापित इस श्रुतआनंद ट्रस्ट को भारतीय तत्वविद्या मंदिर के नियामक पंडितवर्य्यश्री जितेन्द्रभाई बी. शाह का पूरा मार्गदर्शन मिल रहा है। कभी अहमदाबाद के जैन नगर विस्तार में चले आये... नवा शारदामंदिर रोड और वसंतकुंज में टहलने निकल पडे हो तो थोड़ा समय निकालकर श्रुत आनंद भवन में आ जाईयेगा।

ग्रंथ देखिये... पूज्य साधु-साध्वीजी को अध्ययन करते हुए देखिये... साधुसाध्वीजी की पात्र-उपकरण वगैरह के द्वारा हो रही भक्ति को देखिये... आपको अच्छा लगेगा... और आप आयेंगे तो हमें भी अच्छा लगेगा।

आखिर...हम सब व्यापारी है... महावीर के नाम के।

हम सब प्रवासी है... महावीर के धाम के।

व्यापारी मिले... प्रवासी एकत्र हो... फिर बातें तो प्रभु महावीर के शासन की ही होगी ना ?

आणंदजी कल्याणजी संचालित

छापरियाली पांजरापोल यानी जीवदया तीर्थ !

शाश्वतगिरि शत्रुंजय-पालीताणा से ४० किलोमीटर की दूरी पर जेसर नामक गाँव के पास छापरियाली नामक गाँव में सुनियोजित रुप से चल रही पांजरापोल-गौशाला संस्था का समूचा कार्यभार ई.सन. १८५२ से आणंदजी कल्याणजी पेढी सम्हाल रही है ! यानी करीबन १६० साल से यह पांजरापोल चल रही है। भावनगर के महाराजा श्री अखेराजसिंहजी तथा भावसिंहजी ने उनके स्वर्गवासी बड़ेरे महाराजा विजयसिंहजी की पुण्य स्मृति में छापरियाली गाँव, अबोल, निरीह पशु पक्षियों को रखने, सम्हालने व पालने के लिए धर्मादा के रुप में भेंट किया था।

फिलहाल पांजरापोल में ३ हजार की संख्या में छोटे बड़े जानवर-पशु आश्रय ले रहे है। उन सब की सुविधा के लिए पांजरापोल में १५ बडे 'शेड़' बना दिये गये है। बीमार और विकलांग प्राणियों के लिए एव ओपरेशन थियेटर एवं ट्रेक्टर-ट्रोली (एम्ब्युलन्स सा वाहन) भी संस्था के पास है ! हमेशां पशु चिकित्सक के द्वारा पूरी चिकित्सा की जाती है।

संस्था ने दानदाताओं के सहयोग से इर्दगिर्द ३० चेकडेम बनाये है। पानी का स्तर उपर उठने से संस्था एवं इर्दगिर्द के किसानो को भी इसका लाभ मिलता है।

छापरियाला पांजरापोल के पशु ओपरेशन थियेटर में ओटोमेटिक ओपरेशन टेबल पर आधुनिक संसाधनों के द्वारा जानवरों की बीमारियाँ का इन्तजाम किया जा रहा है।

इस संस्था की कार्यवाही व व्यवस्था शक्ति को अभिनंदित करते हुए गुजरात सरकार ने गोसेवा आयोग : गांधीनगर की और से राज्य में प्रथम पांजरापोल का एवोर्ड भी प्रदान किया गया है।

दान हेतु छापरीयाली पांजरापोल में जीवदया की विविध योजनाएँ

१. रु. ९,५१,०००/- पशुओं को रखने के लिए शेड निर्माण हेतु - शेड में योग्य स्थान पर तक्ती में नाम लिखा जायेगा ।

२. रु. ४,५१,०००/- पशुओं को पीने का पानी उपलब्ध कराने हेतु कुआ निर्माण हेतु - कुए पर तक्ती में नाम लिखा जायेगा ।

३. रु. २,००,०००/- पशुओं को रखने हेतु बाड़ा निर्माण हेतु - बाडे में तक्ती पर नाम लिखा जायेगा ।

४. रु. ७५,०००/- पशुओं के लिए पीने का पानी उपलब्ध कराने हेतु चेकडेम बनाने के लिए - चेकडेम पर तक्ती में नाम लिखा जायेगा ।

५. रु. ५०,०००/- पशु चिकित्सा केम्प के लिए ।

६. रु. ३५,०००/- पशुओं को पानी पीने के लिए प्याऊ बनाने हेतु - प्याऊ पर तक्ती में नाम लिखा जायेगा ।

७. रु. १०,०००/- कबूतरों के दाने के लिए - कायमी तिथि के दिन बोर्ड पर नाम लिखा जायेगा ।

८. १०,०००/- कुत्तो को रोटी के लिए - कायमी तिथि के दिन तक्ती पर नाम लिखा जायेगा ।

९. १०,०००/- पशुओं की दवा एवं चिकित्सा के लिए तिथि के दिन बोर्ड पर नाम लिखा जायेगा ।

१०. रु. १५,०००/- घासचारा गुड-लापसी-खाना देने के लिए कायमी तिथी-पालीताणा भाताघर में विश्रामस्थान की दीवाल पर तक्ती में नाम लिखा जायेगा ।

११. रु. ७,५००/- पशुओं के लिए एक दिन के घासचारे के लिए - तिथि के दिन पालीताणा भाताघर में बोर्ड पर नाम लिखा जायेगा ।

१२. रु. १,५१,०००/- लंबे समय के लिए १० × ३० फीट

१३. रु. १,००,०००/- कम समय के लिए ८ × ३० फीट

पांजरापोल संबंधित कार्यो के लिए संपर्क सूत्र :

शेठ आणंदजी कल्याणजी, छापरीयाली पांजरापोल, मु.पो. छापरीयाली वाया - जेसर : ३६४५१०, जिला. : भावनगर

टेलीफोन : (०२८४४) २९०२४५

'मागुं तो बस इतना प्रभु के पास ।'

- आचार्यश्री प्रद्युम्नसूरिजी म.सा.

बरसो पहले की बात है । तब पालीताना में मानसिंग ठाकुर का राज्य था । ठाकुर बड़ा ही खुद्दार... गुरुरवाला और दमदार आदमी था । इस ठाकुर के राज्य में करसन चोपदार नामका एक भगत आदमी रहता था । आज उसी की बात हो जायें ।

शत्रुंजय पर्वत पर दादा आदिनाथ के दरबार में रोजाना चार बार छडी पुकारी जाती थी । छडी पुकारनेवाला था यही करसन चोपदार । करसन था भी पूरा साड़े पाँच फीट की ऊँचाईवाला गबरु आदमी । सीसम की काठी सा गठीला बदन और रंग भी चमकते सीसम सा ही । आवाज में आषाढी मेघ की गर्जना की ललक और अंदाज यानी मोर के केकारव की कला । जब करसन छडी पुकारे तो अच्छे अच्छे भी डोलने लगे । उसके आवाज का जादू तो था ही पर उस आवाज की झंकार में जो रंग समाया था वह था आदीश्वर दादा के प्रति भीतरी श्रद्धा का ! भावना का ! यह रंग और कहीं दिखायी ना दे वैसा ।

एक दिन मानसंग ठाकुर गिरिराज की यात्रा पर आये । रिसाला तो साथ था ही, वो जैसे ही दादा के दरबार में पहुँचे, करसन ने बुलंद आवाज में दादा की छडी पुकारी । ध्रुपद के गान सी... धीर...गंभीर आवाज में करसन की नाभि से निकली ध्वनि-छडी सुनकर ठाकुर का दिल बाग बाग हो उठा । अपनी खुशी को जाहिर करने के लिए उन्होने अपने दाहिनें पैर में जो सोने का कड़ा पहना था... उसका पेंच निकालकर हाथ में लिया । सवासो तोले का वह कड़ा करसन को देने के लिए हाथ लम्बा किया पर चतुर ठाकुर देने से पहले रुक गये ।

'करसन ने बांया हाथ क्यों फैलाया ?' करसन ने कहाँ : 'दाहिना हाथ तो दादा के अलावा और किसी के आगे नहीं फैलाया जाता ।' ठाकुर ने कहा : ठीक है... और कड़ा वापस पैर में पहन लिया । देखनेवाले सभी अवाक्-खामोश-स्तब्ध रह गये । दरबार ठाकुर मन में करसन की छडी की पुकार... और उससे भी ज्यादा उसका रुआब, दोनों बस गये ।

करसन तो दादा आदिनाथ का दिल से सच्चा भक्त था । भगवान भी जो दिल देते है उसे दिल देकर ही देते हैं । रोजाना सवेरे तडके पौं फटने के समय दादा का गभारा-गर्भगृह खुले... उस समय करसन नहा धोकर, स्वच्छ होकर गभारे के पास आकर झुक झुक कर नमन करे... खुले मन से और भरे हृदय से बुलंद आवाज में दादा की छड़ी पुकारे । बाद में अंदर जाकर दादा की गोद में रहे हुए फूलों के ढेर को हाथ से इधर उधर करे... और उसे रानीछाप चांदी का एक रुपया और एक चवन्नी हाथ में आये । वो कहता... यह तो दादा की मुझे बख्शीश है । दादा रोजाना देते है ।'

बात गयी मंदिर के पुजारी... देखरेख करनेवाले बारोटों तक । बारोट कहने लगे... 'रुपये का हक हमारा बनता है...' करसन ने कहा 'ठीक है माई-बाप । आप ले लेना ।' दूसरे ही दिन दरबार खुलते ही बारोट भी आ गये । करसन भी आ पहुँचा था । पुजारी ने गभारा खोला... छडी पुकारी... बारोट लोग अंदर गये... फूलों में खोजा कलदार रुपया । पर फूलों के अलावा उन्हे कुछ हाथ लगा नहीं । सभी चेहरा लटकाये हुए बाहर आये । बाद में करसन गया भीतर में । दादा को नमन करते हुए फूलों को इधर उधर किया... सभी की निगाहें वही थमी थी । सभी निहार रहे थे और करसन के हाथों में चांदी का चमकता रुपया आ गया । सभी बोल उठे : वाह । आदीश्वर दादा सच्चे और उनका यह करसन भगत भी सच्चा ।

विजयादशमी का दिन है । दशहरे की सवारी बड़े शानशौकत से निकली है । पालीताना के ठाकुर राजा मानसिंह हाथी के औहदे पर बैठे हुए है । रासरिसाला पूरे जमावड़े के साथ निकला था । सवारी हवाई महल से निकली... गाँव के बीच से गुजरती हुई तलेटी (शत्रुंजय पर्वत की तलहटी) की और आगे बढ रही थी ।

आज जहां वल्लभविहार के सामने पाँच बगले है, वहाँ पर उन दिनों खेजड़े का पेड़ था । पेड़ काफी बड़ा था, उसके नीचे बड़ा सा गोल चबूतरा बना हुआ था । वह खीजडियो ओटलो (गुजराती में 'ओटला' यानी चबूतरा... ऊँची जगह) के नाम से जाना जाता था । वहां करसन चोपदार आराम से बैठा हुआ था । सवारी वहां से गुजरने लगी... हाथी के औहदे पर बैठे हुए राजा मानसिंग ठाकुर की निगाहें करसन पर गिरी । चालु सवारी रुकवा कर ठाकुर ने करसन से कहा : 'करसन, छडी पुकार । मैं तुझे घेटी गाँव बख्शीश कर दूंगा ।' पूरी सवारी और इकट्ठे हुए लोगों के कान सजग हो उठे । 'करसन क्या कहता है ।' करसनने कहा : जी हजूर, छड़ी तो दादा के आगे ही पुकारता हूँ । घेटी गाँव तो क्या... राज्य के सारे गाँवो की जागीर मेरे नाम कर दो तब भी मैं यहाँ छड़ी नहीं पुकारुगा ।' राजा मानसिंह खामोश हो उठे । सवारी वैसे ही आगे बढी ।

सभी लोग करसन की निडरता और दादा के प्रति उसकी अडिग आस्था के प्रति अहोभाव से भर उठे । यह खुद्दारी... और जमीर था करसन का । हम सब को छू जाए वैसी यह खुद्दारी है । मांगने का मन हो मालिक से तो बस, ऐसी खुद्दारी हमारे भीतर भी उजागर हो ।

(आचार्य श्री प्रद्युम्नसूरिजी की पुस्तक 'पाठशाला' में से भावानुवाद)

जिनमंदिरों का जीर्णोद्धार

आणंदजी कल्याणजी पेढी का एक महत्त्वपूर्ण कार्य है जीर्णोद्धार । जीर्ण-शीर्ण बने हुए पुराने, प्राचीन, जिनमंदिरो का रुख रखाव करना, उसकी प्राचीनता नष्ट न हो उस ढंग से उस का पुननिर्माण करना फिर वे मंदिर तीर्थस्थानों में हो, शहरों में हो... कस्बों में हो या छोटे गाँव में कोने में हो ।

प्राचीन शिल्प स्थापत्य यह हमारे उज्जवल अतीत का आईना है वैसे ही हमारा इतिहास है... हमारी परंपरा... पुरानी जीवनशैली, कार्यशैली निर्माण शैली... वगैरह का परिचायक है ।

पेढी के द्वारा जीर्णोद्धार के कार्य में हिस्सेदारी... योगदान और सहयोग का सिलसिला प्रारंभ होता है इस्वीसन १८९७ से । २-९-१९८९ के दिन तलाजा तीर्थ स्थित साचादेव सुमतिनाथ भगवान के जिनालय के जीर्णोद्धार हेतु प्रस्ताव पारित करके आर्थिक सहयोग करने का उल्लेख मिलता है... इसके बाद का पूरा सिलसिला पेढी के इतिहास में संग्रहित है । ३०-६-१९०३ के दिन काकंदी और क्षत्रियकुंड जैसे दूरस्थित जिनालयों के जीर्णोद्धार में आर्थिक सहयोग दिया गया ।

इस जीर्णोद्धार-सहयोग का लाभ भारतभर के तमाम जिनालयों को मिलता है ।

अहमदाबाद स्थित अहमदाबाद देरासर जीर्णोद्धार कमिटि इस्वीसन् १९३५ से अस्तित्व में है जो कि मंदिरो के जीर्णोद्धार में काफी सहयोग करती है । उसने १९८५ की साल तक ५०० से ज्यादा जिनमंदिरों का जीर्णोद्धार

करवाया था । वह संस्था पेढी के झवेरीवाड (अहमदाबाद शहर) स्थित कार्यालय से ही सारा कार्य करती रही थी ।

पेढी ओर से जैन संघ की प्राचीन विरासत और धरोहर से जिनालयों का जीर्णोद्धार अत्यंय सावधानी के साथ भक्ति भावपूर्वक करवाया जाता है । कुछ एक मंदिरो का पुर्ननिमाण पेढी के द्वारा नियुक्त निष्णात सोमपुरा-शिल्पी के द्वारा सुनियोजित रुप से करवाया जाता है... कुछ संघों में स्थानिक प्रबंधन कर रही संस्थाए जीर्णोद्धार का कार्य देखती है... पेढी उन्हें आर्थिक सहयोग करती है ।

प्रतिवर्ष पेढी के पास जीर्णोद्धार व नवनिर्मित हो रहे मंदिरों जिनालयों के लिए अर्थ सहयोग की अर्जियाँ ढेरों की संख्या में आती हैं । सभी संघो को आणंदजी कल्याणजी पेढी से सहयोग की अपेक्षा रहती है । पेढी के ट्रस्टी एवं कार्यवाहक गण के द्वारा तमाम अर्जियों को उनकी गुणवत्ता, अनिवार्यता, स्थानिक संघों की परिस्थिति वगैरह बहुत सारे पहलूओं पर गहरा सोच विचार कर देवद्रव्य की राशि से लाभ लिया जाता है ।

पिछले कुछ बरसों के जीर्णोद्धार व नवनिर्माण के सहयोग के आंकडे देखिये :

वर्ष २००९-१०		संघ
जीर्णोद्धार	:	६१
नवनिर्माण	:	३९
कुल		९७

वर्ष २०१०-११		संघ
जीर्णोद्धार	:	५३
नवनिर्माण	:	३२
कुल		८५

वर्ष २०११-१२		संघ
जीर्णोद्धार	:	५७
नवनिर्माण	:	३८
कुल		९५

वर्ष २०१२-१३		संघ
जीर्णोद्धार	:	४४
नवनिर्माण	:	१७
कुल		६१

वर्ष २०१३-१४		संघ
जीर्णोद्धार	:	४२
नवनिर्माण	:	२८
कुल		७०

पेढी ने हाल ही में निम्न कल्याणभूमियों-तीर्थों में चल रहे जीर्णोद्धार कार्यो में लाभ लिया है ।

रत्नपुरी, कंपिलजी, हस्तिनापुर, भद्दिलपुर, शौरीपुर, उमता गाँव (गुजरात), जगवल्लभ पार्श्वनाथ जिनालय (अहमदाबाद)

पेढी के प्रबंधन में स्थित तीर्थो में चल रहे जीर्णोद्धार के कार्यो का आकलन निम्न रुप में हैं ।

(१) मूछाला महावीर तीर्थ : २४ देवकुलिकाओं का जीर्णोद्धार

(२) मक्षीजी तीर्थ : ३६ देवकुलिकाओं का जीर्णोद्धार

(३) पालीताना-शत्रुंजय गिरिराज पर राजर्षि कुमारपाल द्वारा निर्मित मंदिर, पाँचशिखरी मंदिर की टूक स्थित उजमफई टूक के मंदिर, साकरवसी टूक और पुंडरिक स्वामी की टूक ।

(४) जूनागढ-गिरनार : तीर्थ पर चौमुख जिनमंदिर, मल्लवाला मंदिर, ज्ञानवापी मंदिर, जूनागढ शहर में स्थित महावीर स्वामी मंदिर के परिसर में स्थित चौमुख देहरी को नवनिर्मित करने का कार्य ।

(५) राणपुर : मुख्य मंदिरजी के घूमट-गूंबज वगैरह का कार्य ।

(६) तारंगा : चौमुख देहरी का जीर्णोद्धार, रथरुम और केसर-चंदन घिसने के कमरे का पुनर्निर्माण

(७) कुंभारिया : २ नई देवकुलिकाओं का नवनिर्माण, माणिभद्रवीर एवं अंबिकादेवी की देवकुलिका का निर्माण ।

विशेष शिबिर

आनंदजी कल्याणजी पेढी की और आषाढ वद ९ एवं १० तदनुसार २१ एवं २२ जून २०१४ को अहमदाबाद :

हठीसिंग देरासर-धर्मशाला केम्पस में

दो दिवसिय जैन शिल्प स्थापत्य शिबिर

का आयोजन किया गया है । इसमें नूतन जिनालय निर्माण से संबंधिक अनेक पहलूओं की विशद् जानकारी निष्णात एवं अनुभवी तजज्ञों की ओर से दी जाएगी । इस आयोजन में शेठ जीवणदास गोडीदास पेढी शंखेश्वर, एवं समस्त मुंबई श्वेताम्बर जैन संघ भी सहयोगी हो रहे है ।

सम्मेत शिखर महातीर्थ के बारे में

जिन शासन की परंपरा मे तीर्थों एवं तीर्थस्थानों का अपना अलग महत्तव एवं महिमा है । तीर्थभूमि के पावन परमाणु साधकों को साधना के लिए सूक्ष्म बल प्रदान करते हैं । आराधकों को आराधना के लिए भीतरी भूमिका का सर्जन होता है, इन तीर्थों के वातावरण के द्वारा उपासकों को उपासना हेतु ऊर्जा प्राप्त होती है, ऐसी तीर्थभूमिओं पर सैंकडों बरसों से निर्मित मंदिर, जिनालय, देवालय, देरियाँ, देवकुलिकाएँ, चरण पादुकाएँ, छतरियां और भी पवित्र स्थान वगैरह की रक्षा-सुरक्षा, रख-रखाव एवं मरम्मत, पुनर्स्थापन वगैरह का कार्य भी उतना ही महत्वपूर्ण है और जिम्मेदारी से भरा है ।

मुगलकाल में अधिकांश तीर्थ श्वेताम्बर परंपरा के महान जैनाचार्य हीरविजयसूरिजी को बादशाह अकबर के द्वारा उपहार स्वरुप भेट प्रदान किये गये थे । इनके फरमान, जिन पर मुगल साम्राज्य की मुहरे हैं... आज भी सुरक्षित हैं ।

आचार्य हीरविजयसूरिजी एवं उनकी परंपरा में हुए महान प्रभावक आचार्य विजयसेनसूरिजी, विजय देवसूरिजी, शांतिचन्द्र उपाध्याय, भानुचन्द्र उपाध्याय, सिद्धिचन्द्र उपाध्याय, विजयप्रभसूरिजी, राजसागरजी वगैरह साधु पुरुषों ने समय समय पर जैन श्वेतांबर परंपर के अग्रणी श्रेष्ठी... शाह सौदागर, श्रद्धा एवं श्री से संपन्न श्रेष्ठियों को प्रेरणा देकर तीर्थ रक्षा करवायी... तीर्थो की देखरेख व प्रबंध की जिम्मेदारी उन्हें सोंपी । श्वेतांबर मूर्तिपूजक जैन परंपरा के श्रावकों ने श्रद्धा भक्ति एवं समर्पण के साथ उन तीर्थों का प्रबंधन किया और आज भी वे कर रहे हैं ।

पूर्व भारत, विशेष तौर पर सम्मेतशिखर और उसके इर्दगिर्द के तीर्थों का प्रबंधन १७वी / १८वी सदी से जियागंज-अजीमगंज (मुर्शिदाबाद) के जगतशेठ के रुप में विख्यात श्रेष्ठि परिवारों के द्वारा होता रहा । वि.सं. १७८१ (इस्वीसन् १७२५) मुगल बादशाह मुहम्मदशाह ने शेठ फतहचन्दजी को सर्व प्रथम जगतशेठ की पदवी एनायत की । वि.सं. १८०५ (इस्वीसन् १७४९) के दिन अहमदशाह नाम के बादशाह ने शेठ मेहताबचन्दजी को मणीयुक्त जगतशेठ की मोहर के साथ फरमान जारी करते हुए जगतशेठ की पदवी दी । वि.सं. १८०९ (इस्वीसन् १७५३)में मेहताबचंद जगतशेठ को बादशाह ने मधुवन कोठी, जयपुर नाला, प्राचीन नाला, जलहरि कुंड, पारसनाथ तलहटी के बीच की ३०१ बीघा जमीन व पारसनाथ पहाड भेंट स्वरुप प्रदान दिय ।

शाह आलम (तृतीय)ने वि.सं. १८२२ (इस्वी १७६६) में खुशालचन्द शेठ को जगतशेठ की पदवी एनायत की, इन्ही जगतशेठ खुशालचंदजी ने वि.सं. १८२५ (इस्वीसन १७६९) में पारसनाथ पहाडी की तलहटी एवं पर्वत पर के मंदिरों और देहरियों की प्रतिष्ठा आचार्यश्री धर्मसूरिजी के वरद हस्त से करवायी ।

वि.सं. १८४० (इस्वीसन १७८४) में इस्ट इन्डिया कंपनी ने हरखचन्द शेठ को जगतशाह का खिताब दिया । इसके बाद यह पद देना बंद हो गया । इस्वी १७८६ से १७९३ के बीच बंगाल में जमीदारी को लेकर कुछ कानून बने । इधर कुछ कारणों को लेकर जगतशेठ परिवार मुर्शिदाबाद छोड़कर कलकत्ता जाकर बस गया । इस दौरान अंग्रेजों ने इस पारसनाथ पहाड़ को राजा पालगंज के अधिकार में रख दिया पर सम्मेत शिखर तीर्थ की व्यवस्था - प्रबंधन वगैरह सब कुछ कलकत्ता में रहनेवाले जगतशेठ के परिवार ही करते रहे ।

ब्रिटीश साम्राज के दौरान ही इन तीर्थों की व्यवस्था हेतु जैन श्वेताम्बर सोसायटी का गठन हुआ और सन् १८७२ से यह सोसायटी और उसके पदाधिकारी, ट्रस्टी वगेरह श्वेताम्बर जैन परंपरा के आचार्यो व अग्रणियों की सलाह सूचनानुसार तीर्थो का प्रबंधन करते रहे हैं। सम्मेतशिखरजी के उपरांत क्षत्रियकुंड, ऋजुवालुका, चंपापुरी, काकंदी वगैरह तीर्थो का प्रबंधन भी यही सोसायटी कर रही है ।

प्रबंधन व्यवस्था, सुरक्षा व रख-रखाव, विकास और जीर्णोद्धार के खर्च में जैन श्वेताम्बर संघ, संस्थाएं, श्रावक श्राविकाए इत्यादि इस सोसायटी को आर्थिक सहयोग प्रदान करके तीर्थ की व्यवस्था व सुरक्षा में योगदान देते रहे हैं ।

आणंदजी कल्याणजी पेढी भी इन कार्यो में लाभ लेती रही है । सम्मेतशिखरजी तीर्थ विकास के तमाम कार्य जैन श्वेताम्बर सोसायटी के द्वारा ही हो रहे है ।

अहमदाबाग स्थिर निम्न जिनमन्दिर एवं संस्थाओं का प्रबंधन आणंदजी कल्याणजी पेढी के द्वारा किया जाता है ।

क्रम	संस्था	स्थान
१.	श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ जिन मंदिर	वाघणपोल (झवेरीवाड)
२.	श्री आदिश्वर जिन मंदिर	वाघणपोल (झवेरीवाड)
३.	श्री अजितनाथ जिन मंदिर	वाघणपोल (झवेरीवाड)
४.	श्री महावीरस्वामी जिन मंदिर	वाघणपोल (झवेरीवाड)
५.	श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिन मंदिर	घीकांटा रोड
६.	श्री अष्टापदजी जिन मंदिर	दोशीवाडा पोल
७.	श्री आदीश्वर जिन मंदिर	आनंदजी कल्याणजी ब्लोक (जमालपुर)
८.	श्री चकेश्वरी माता की देवरी	वाघणपोल (झवेरीवाड)
९.	उजम फईबा ट्रस्ट	वाघणपोल (झवेरीवाड)
१०.	विजय कमल देव ज्ञानशाला ट्रस्ट	वाघणपोल (झवेरीवाड)
११.	शांतिसागर ट्रस्ट	देवशा का पाडा

शत्रुंजय गिरिराज की यात्रा करनेवाले यात्रिक भाई बहनो के लिए महत्त्वपूर्ण नियम !

मोबाईल - केमेरा वगेरे के लिए :

(१) यात्रा के दौरान मोबाईल किसी भी प्रकार का केमेरा वगैरह साथ मे न ले जाएँ ।

(२) गिरिराज पर आशातना व सुरक्षा कारणों से (किले के भीतर) विडियोग्राफी या फोटोग्राफी पूरी तरह प्रतिबंधित है ।

(३) गिरिराज इन्स्पेक्टर ऑफिसर के पास मोबाईल-केमेरा अनामत रखने की व्यवस्था है। यदि मोबाईल साथ मे रखा है तो उसे पूरी तरह बंध रखे ।

(४) मंदिर परिसर में यात्रिकों के द्वारा यदि मोबाईल या केमेरा का उपयोग होने का पता लगने पर सिक्युरिटी, पेढी का स्टाफ उन यात्रिक भाई बहनों को मंदिर परिसर से बाहर जाने के लिए बाध्य करेंगे । सभी इस बात का विशेष ध्यान रखें ।

पहनावे के बारे में ।

गिरिराज की यात्रा के दौरन बरम्युड़ा - पेन्ट, हाफ पेन्ट और महिलाएं-बहने स्लीवलेस जैसे कपड़े पहनकर मंदिर में कृपया प्रवेश न करे। उन्हें रोका जाएगा। बहनों से निवेदन कि वे ड्रेस के साथ दुपट्टे का सविशेष उपयोग करें ।

समाचार-सार

चलो, सब मिल सिद्धगिरि चलिए :

इस्वीसन २०१२ में कुल ४ लाख ३५ हजार भाई-बहनों ने इस पावन गिरिराज की यात्रा करके अपने आपको धन्य बनाया । इस में ८९५ जितने विदेशी महानुभाव थे । इस्वीसन २०१३ में यह संख्या ५ लाख ७२ हजार तक पहुँचती है और विदेशी यात्री १८२५ की संख्या में गिरिवर के विरल दर्शन करने के लिए सद्‌भागी बने हैं ।

सन २०१४ में २ फरवरी से १५ मई तक १ लाख ७८ हजार भाई-बहनो ने शत्रुंजय महातीर्थ की यात्रा की । ९०० जितने पूज्य साधु-साध्वीजी भगवंत इस भूमि की स्पर्शना करने पधारे... जिसमे १२ आचार्य भगवंत भी शामिल है ।

गिरनार के शिखर पर अरिष्टनेमि :

२२ वें तीर्थंकर नेमनाथ के दीक्षा-केवल्य और निर्वाण इन तीन कल्याणकों के पावन बनी गढ गिरनार की चोटियों पर स्थित जिनालयों के दर्शन-वंदन-पूजन करने हेतु २ फरवरी से १५ मई तक २० हजार ६६७ जितने यात्रिक भाई बहन पधारे थे । चार हजार से ज्यादा सीढिया चढकर इन्होंने तीर्थवंदना की... । ६८ जितने संघ-समूह बस या अन्य वाहनों के द्वारा तीर्थयात्रा करने पधारे थे ।

कुंभारीयाजी :

अरावली की गोद में छोडी बड़ी पहाडियों के बीच हरियाली और वनश्री से सजे सतरंगी सौन्दर्य से भरी पूरी भूमि यानी कुंभारिया तीर्थ !

५ कलात्मक प्राचीन जिनमंदिरों से सुशोभित इस तीर्थ की यात्रा हेतु १-४-१३ से १५-५-१४ तक १४ हजार यात्रिक भाई बहन पधारें । २२० जितने पूज्य श्रमण-श्रमणी भगवंत ने तीर्थभूमि पर पदार्पण किया । ९० जितने संघ बस एवं वाहनो के द्वारा यात्रा हेतु पधारें ।

तारंगाजी :

अरावली की एक और मनोहारी पर्वत श्रेणि तारणगिरि यानी तारंगा शैल । मोक्षबारी, सिद्धशिला, कोटिशिला जैसी तीन टूको से विख्यात इस भूमि पर द्वितीय तीर्थंकर अजितनाथ भगवान का पूर्व-पश्चिम २८० फीट लंबा... उत्तर-दक्षिण में २१२ फीट चौड़ा एव १२६ से १३० फीट की ऊँचाईवाला नीलगगन से बतियाता हुआ जिनमंदिर । गुर्जरेश्वर राजा कुमारपाल ने अपने श्रद्धेय गुरुदेव कलिकाल सर्वज्ञ आचार्यश्री हेमचन्द्रसूरिजी की प्रेरणा से इस का निर्माण करवाया था । अन्य चार छोटे मंदिरो से युक्त इस तीर्थ की यात्रा करने फरवरी से मई २०१४ तक ३७ हजार ३०० जितने दर्शनार्थी भाई-बहन पधारे थे । इन में २३ हजार से ज्यादा अन्य धर्मावलम्बी महानुभाव थे । १२ संघ वाहनों के जरिये इस तीर्थभूमि की स्पर्शना करने पधारे थे । जबकि विहार के दौरान ८६ जितने पूज्य साधु-साध्वीजी भगवंत यात्रार्थ पधारे थे ।

राणकपुर :

राजस्थान की रंगीली धरती के सिंगार और सिंदूरी तिलकरुप राणकपुर तीर्थ के त्रैलोक्यमंडन, धरणविहार नामक विश्वविख्यात श्री ऋषभदेव भगवान के चतुर्मुख जिनालय के दर्शन-वंदन-पूजन एवं स्तवन द्वारा अपने आपको धन्य बनाने हेतु २ फरवरी से १६ मई २०१४ के दौरान १ लाख

सत्रह हजार यात्रिक भाई बहन यहां पधारे थे । इनमे ३५ हजार से ज्यादा विदेशी पर्यटक भी शामिल है । इस दौरान यहां ११७ पूज्य साधु-साध्वीजी का पदार्पण हुआ । जिनमें ३ पूज्य आचार्य भगवंत थे । १५ जितने संघ बसों के द्वारा एवं १ छ'री पालित पदयात्री संघ पधारे थे ।

मूछाला महावीर :

मारवाड़ की मनुहारमयी मनस्वी धरती का आभूषण यानी मूछाला महावीर । इस तीर्थ की यात्रा हेतु २ फरवरी से १५ मई तक ५ हजार जितने महानुभाव पधारे थे । ५० साधु-साध्वीजी भगवंत व २ आचार्य भगवंतों ने इस भूमि की स्पर्शना की ।

मक्सी तीर्थ

मध्य प्रदेश के शाजापुर जिल्ले में स्थित मक्सी पार्श्वनाथ भगवान के विख्यात मक्सी तीर्थ की यात्रा हेतु २ फरवरी से १५ मई के दौरान ११६७ महानुभाव पधारे थे । ३७ जितने पूज्य साधु-साध्वीजी के पदार्पण का लाभ भी इस तीर्थभूमि को मिला ।

शेरिसा तीर्थ

गुजरात में अहमदाबाद से ४० किलोमिटर की दूरी पर स्थित शेरिसा तीर्थ के प्रत्यंत प्रभावी मूलनायक शेरिसा पार्श्वनाथ एवं भोंयरे में बिराजमान लोढण पार्श्वनाथ, केसरिया आदिनाथ वगैरह प्राचीन मनोहारी जिनप्रतिमाओं के दर्शनार्थ २ फरवरी से १५ मई २०१४ के दौरन २८०० यात्रिक भाई बहन पधारें । ५२४ पूज्य साधु-साध्वीजी एवं १४ आचार्य भगवंतों ने इस पावनभूमि की यात्रा की ।

तीर्थ व्यवस्था, सलाह सूचन, दान-सहयोग, जीवदया, पांजरापोल, जीर्णोद्धार वगैरह प्रवृत्तियों के लिए पेढी के संपर्क सूत्र

शेठ आणंदजी कल्याणजी पेठी
श्रेष्ठि लालभाई दलपतभाई भवन,
२५, वसंतकुंज, नवा शारदा मंदिर रोड, पालडी, अहमदाबाद-३८० ०२७
फोन : (०७९) २६६४४५०२, २६६४५४३०
समय : सुबह ११ से १-३० व् दोपहर २ से ३-३०
Telefax : 079-266082441 • Email : shree_sangh@yahoo.com
(रविवार एवं अवकाश के अतिरिक्त)

शेठ आणंदजी कल्याणजी पेठी
पटनी की खड़की, झवेरीवाड, अहमदाबाद-३८० ००१
समय : सुबह ११ से १-३० व दोपहर २ से ३-३० तक
फोन : (०७९) २५३५६३१९
(रविवार एवं अवकाश के अतिरिक्त)

श्री कयवनभाई हेमेन्द्रभाई संघवी
विश्रुत जेम्स, ७०१-२ ए अमन चेम्बर्स ७वा माला,
ओपेरा हाउस, मुम्बई-४०० ००४
फोन : (०२२) ३२९६१८७०
समय : दोपहर १२ से ५ (अवकाश दिनों के अतिरिक्त)

शेठ आणंदजी कल्याणजी पेठी
श्री रजनीशांति मार्ग, पालीताणा-३६४ २७०
ओपेरा हाउस, मुम्बई-४०० ००४
Tele : 02848–252148, 253656
समय : सुबह ९ से १२.३० दोपहर २.३० से ७

और अंत में

आपको 'आनंदकल्याण' का यह अंक अच्छा लगा ? क्या अच्छा लगा ? कुछ पसंद न भी आया हो तो वह भी हमें खुले मन से पर नरम कलम से लिख भेजें । हमें अवश्य अच्छा लगेगा । पत्रव्यवहार के लिए ई-मेईल माध्यम इच्छनीय एवं उपयुक्त रहेगा ।
anandkalyanmagazine@gmail.com

अहमदाबाद जैन संघ के सुवर्णयुग के शासन समर्पित श्रेष्ठी परंपरा के अग्रणी

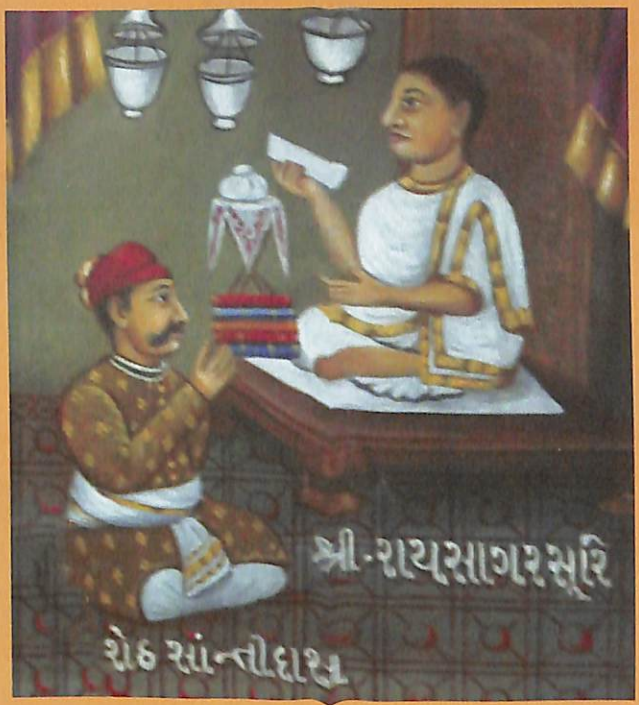

शेठश्री शांतिदास झवेरी

आणंदजी कल्याणजी पेढी के पूर्व प्रमुख

शेठश्री कस्तूरभाई लालभाई

शेठश्री श्रेणिकभाई कस्तूरभाई

BOOK - POST

To,

आनंद कल्याण (त्रिमासिक पत्र)

श्रेष्ठी लालभाई दलपतभाई भवन, १५, वसंतकुंज,

नवा शारदा मंदिर रोड, पालडी, अहमदाबाद - ३८० ००७.

E-mail : anandkalyanmagazine@gmail.com